Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN(o): 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 9.134
Volume - 9, Issue - 8, August - 2026

DOIs:10.2018/SS/202608005 --:-- Research Paper / Article / Review

मोहन राकेश की कहानियों में आधुनिक दाम्पत्य जीवन: एक मनोवैज्ञानिक अध्ययन

[1] **निर्मला परेवा**, [2] **डा. संजु झा**,
[1]शोधार्थी, हिंदी विभाग, महाराज विनायक ग्लोबल विश्वविद्यालय, ढण्ढ आमेर,जयपुर, भारत
[2]शोध निर्देशिका, हिंदी विभाग, महाराज विनायक ग्लोबल विश्वविद्यालय, ढण्ढ आमेर,जयपुर, भारत
Email - [1]naaritumho@gmail.com

सारांश: नई कहानी आंदोलन में आधुनिक दृष्टिकोण को व्यक्तिगत बनाने वाले मोहन राकेश ने अपनी कहानियों का मुख्य विषय आधुनिक जीवन की जटिलताओं, बदलते सामाजिक मूल्यों और मानवीय संबंधों के विघटन को बनाया है। जब वे वर्तमान जीवन की विसंगतियों, संवादहीनता, भावनात्मक अलगाव और व्यक्तिगत संघर्षों को चित्रित करते हैं तब विशेष रूप से उनके कथा-साहित्य में दाम्पत्य संबंध बहुत प्रभावी रूप से अभिव्यक्त होते हैं। मोहन राकेश की कहानियों के आधार पर प्रस्तुत शोध पत्र का उददेश्य आधुनिक दाम्पत्य जीवन के मनोवैज्ञानिक पहलुओं का विश्लेषण करना है। यह अध्ययन उनकी कहानियों के माध्यम से पति-पत्नी संबंधों में आने वाले मानसिक द्वंद्व, अहं-बोध, अकेलापन, असुरक्षा, संवादहीनता, आत्म-पहचान की खोज और भावनात्मक विखंडन का विश्लेषण करता है। अध्ययन से पता चलता है कि मोहन राकेश के कथा-साहित्य में दाम्पत्य संबंध केवल सामाजिक संस्थाओं के रूप में नहीं आते, बल्कि आज की आदमी की मानसिक संरचना और अस्तित्वगत संकटों के प्रतीक बनते हैं। उनके पात्रों ने पारंपरिक वैवाहिक मूल्यों और आधुनिक व्यक्तिवादी मानसिकता के बीच संतुलन बनाने की कोशिश की, लेकिन यह संघर्ष उनके रिश्ते में तनाव और मानसिक अस्थिरता पैदा करता है। विशेष रूप से, लेखक ने मध्यवर्गीय जीवन की परिस्थितियों में दाम्पत्य संबंधों की बदलती प्रवृति और उनके मनोवैज्ञानिक प्रभावों का बहुत सटीक और भावुक चित्रण किया है। इस शोध पत्र का उददेश्य मोहन राकेश की कहानियों के माध्यम से हिंदी कथा-साहित्य में मनोवैज्ञानिक यथार्थवाद का सशक्त चित्रण करना और आधुनिक दाम्पत्य जीवन की मनोवैज्ञानिक जटिलताओं को समझने के लिए महत्वपूर्ण साहित्यिक सामग्री प्रस्तुत करना है।

मुख्य शब्द: दाम्पत्य संबंध, वैवाहिक जीवन, संवादहीनता, आत्मसंघर्ष, भावनात्मक विघटन, मध्यवर्गीय चेतना, आधुनिकता, मनोवैज्ञानिक यथार्थवाद।

1. प्रस्तावना

हिंदी साहित्य में एक नवीन कहानी आंदोलन ने कथा-साहित्य को एक नया दृष्टिकोण प्रदान किया। यह आंदोलन आदर्शवादी और घटनाप्रधान कथा-परंपरा से बाहर निकलकर व्यक्ति के आंतरिक जीवन, मानसिक संघर्ष, अस्तित्वगत संकट और बदलते सामाजिक संबंधों पर ध्यान आकर्षित करता है। नई कहानी के प्रमुख रचनाकारों में मोहन राकेश का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने आधुनिक जीवन की विसंगतियों, मध्यवर्गीय समाज की विडंबनाओं और व्यक्तिगत मनोवैज्ञानिक संघर्षों का बहुत सटीक चित्रण किया है। कथा-साहित्य में वह बाह्य घटनाओं की अपेक्षा पात्रों के अंतर्मन, भावनाओं और संबंधों की जटिलताओं को अधिक महत्व देते है। भारतीय समाज ने स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक बदलाव को देखा। पारिवारिक और दाम्पत्य संबंधों की पारंपरिक संरचना को नगरीकरण, औद्योगीकरण, स्त्री-शिक्षा, आर्थिक आत्मनिर्भरता और व्यक्तिवादी जीवन-दृष्टि के विकास ने बदल दिया। पति-पत्नी के संबंधों में नए प्रकार का तनाव, असंतोष और संवादहीनता ने जन्म लिया, जो संयुक्त परिवारों के विघटन, बदलती सामाजिक भूमिकाओं और व्यक्तिगत स्वतंत्रता की बढ़ती मांग से हुआ था। दाम्पत्य जीवन, जो भारतीय समाज में स्थायित्व, विश्वास और पारस्परिक सहयोग का प्रतीक था, आज कई मनोवैज्ञानिक और सामाजिक चुनौतियों से घिर गया है। मोहन राकेश ने अपनी कहानियों में अत्यंत संवेदनशीलता और कलात्मकता से इस संक्रमणशील यथार्थ को व्यक्त किया है।

एक और जिंदगी में पति-पत्नी के बीच भावनात्मक दूरी और वैवाहिक विघटन का अत्यंत मार्मिक चित्रण मिलता है, जहाँ संबंधों का टूटना केवल सामाजिक घटना नहीं, बल्कि गहरे मानसिक आघात का रूप ले लेता है। सुहागिनें में दाम्पत्य जीवन के भीतर नारी और पुरुष दोनों की भावनात्मक अपेक्षाओं तथा उनके बीच बढ़ती संवेदनात्मक दूरी को रेखांकित किया गया है। अपरिचित में पति-

पत्नी के बीच उपस्थित मानसिक अपरिचय और संवादहीनता यह स्पष्ट करती है कि एक ही छत के नीचे रहते हुए भी व्यक्ति एक-दूसरे से भावनात्मक रूप से दूर हो सकते हैं। इन कहानियों के माध्यम से मोहन राकेश आधुनिक दाम्पत्य संबंधों की उन जटिलताओं को उद्घाटित करते हैं, जिनमें सामाजिक परिवर्तन और मनोवैज्ञानिक संघर्ष एक-दूसरे से गहराई से जुड़े हुए हैं।मोहन राकेश की कहानियों में वर्तमान दाम्पत्य जीवन के मनोवैज्ञानिक पहलुओं का विश्लेषण किया जाता है। यह अध्ययन सामाजिक परिस्थितियों, व्यक्तिवादी चेतना, संवादहीनता, अहं-बोध, आत्म-पहचान की इच्छा और भावनात्मक असंतुलन से दाम्पत्य संबंधों पर प्रभाव डालता है। यह शोध साहित्य और मनोविज्ञान के अंतःविषयक दृष्टिकोण के आधार पर यह सिद्ध करने की कोशिश करता है कि मोहन राकेश की कहानियाँ केवल दाम्पत्य जीवन की वास्तविकता को चित्रित नहीं करतीं, बल्कि आज के मनुष्य की मानसिक संरचना, संबंधों के संकट और वास्तविक संवेदनाओं को भी गहन कलात्मकता से चित्रित करती हैं। इस प्रकार, उनके लेखन से हिंदी साहित्य में मनोवैज्ञानिक यथार्थवाद का महत्वपूर्ण आधार प्राप्त होता है।

2. साहित्य समीक्षा

मोहन राकेश के कथा-साहित्य का अध्ययन मुख्यतः नई कहानी आंदोलन, आधुनिकता-बोध, मध्यवर्गीय जीवन, स्त्री-पुरुष संबंध, मनोवैज्ञानिक यथार्थ तथा अस्तित्ववादी चेतना के संदर्भ में किया जाता रहा है। उपलब्ध आलोचनात्मक साहित्य के माध्यम से स्पष्ट होता है कि मोहन राकेश ने हिंदी कहानी को बाहय घटनाओं की अपेक्षा व्यक्ति के अंतर्मन, संबंधों की जटिलता तथा आधुनिक जीवन की विडंबनाओं से जोड़ा है।

राजेन्द्र यादव ने **कहानी: स्वरूप और संवेदना** में स्त्री-पुरुष संबंधों और आधुनिक हिंदी कहानी की संवेदनात्मक संरचना का विश्लेषण किया है। वे मानते हैं कि वर्तमान जीवन में संबंधों की जटिलता और बातचीत की कमी नई कहानी की मुख्य विशेषताएँ हैं। उनका अध्ययन दाम्पत्य संबंधों की बदलती प्रकृति का संकेत देता है, लेकिन मनोवैज्ञानिक विश्लेषण बहुत सीमित है।

रामदरश मिश्र ने **हिंदी कहानी: अंतरंग पहचान** में आधुनिक मध्यवर्गीय जीवन, अकेलेपन तथा संबंधों के संकट को हिंदी कहानी की प्रमुख प्रवृत्ति बताया है। उनका कहना है कि मोहन राकेश के पात्र सामाजिक परिवर्तन और मानसिक तनाव से संघर्ष करते हैं। यह अध्ययन मनोवैज्ञानिक संकेत अवश्य देता है, लेकिन आज के दाम्पत्य संबंधों को एक स्वतंत्र विषय नहीं मानता।

अमरीश वी. मकवाना के अध्ययन **'Mohan Rakeshji: Life and Creation'** में मोहन राकेश के जीवन, रचनात्मक व्यक्तित्व तथा नई कहानी आंदोलन में उनके योगदान का समग्र परिचय मिलता है। अध्ययन यह इंगित करता है कि लेखक के साहित्य में आधुनिक मनुष्य की मानसिक जटिलताएँ तथा स्त्री-पुरुष संबंध प्रमुख विषय हैं।

ईशिता के शोध **'Literature and Psychology: An Analysis through Mohan Rakesh's Halfway House'** में मोहन राकेश की रचनात्मक दृष्टि का मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य से विश्लेषण किया गया है। यद्यपि इसका केंद्र नाटक है, फिर भी पात्रों के मानसिक द्वंद्व, भावनात्मक तनाव और संबंधगत संघर्ष का विवेचन प्रस्तुत शोध के लिए उपयोगी सैद्धांतिक आधार उपलब्ध कराता है। ।

माणस्विनी रथ एवं इतीश्री सारंगी के अध्ययन **'Acceptance is a Key to Avoid Marital Conflict'** में आधुनिक दाम्पत्य संबंधों में संवाद, पारस्परिक स्वीकार्यता तथा भावनात्मक सहभागिता की आवश्यकता पर बल दिया गया है। यह अध्ययन वैवाहिक संघर्ष के मनोवैज्ञानिक कारणों को समझने में सहायक है और मोहन राकेश की कहानियों में चित्रित दाम्पत्य तनाव की व्याख्या के लिए एक उपयुक्त संदर्भ प्रदान करता है।

संतोषकुमार जे. मिश्रा ने **'Changing Dynamics of Men and Women in Contemporary Indian Society'** में आधुनिक भारतीय समाज में स्त्री-पुरुष भूमिकाओं के परिवर्तन तथा उसके पारिवारिक संबंधों पर प्रभाव का अध्ययन किया है। यह अध्ययन स्पष्ट करता है कि आधुनिकता और व्यक्तिवादी चेतना ने पारंपरिक दाम्पत्य संबंधों की संरचना को प्रभावित किया है। यह दृष्टिकोण मोहन राकेश की कहानियों मे चित्रित आधुनिक दाम्पत्य जीवन को समझने में सहायक सिद्ध होता है।

प्राथमिक स्रोत के रूप में मोहन राकेश की संपूर्ण कहानियाँ प्रस्तुत शोध का आधार रही हैं। उपलब्ध साहित्य के समग्र अध्ययन के आधार पर अधिकांश शोध नई कहानी, आधुनिकता, मध्यवर्गीय जीवन, मानवीय संबंधों अथवा मनोवैज्ञानिक यथार्थ पर केंद्रित हैं। किंतु 'मोहन राकेश की कहानियों में आधुनिक दाम्पत्य जीवनः एक मनोवैज्ञानिक अध्ययन' विषय उनकी कहानियों का समग्र, तुलनात्मक एवं मनोवैज्ञानिक विश्लेषण अपेक्षाकृत कम उपलब्ध है। यही शोध-अंतर प्रस्तुत अध्ययन की मौलिकता और आवश्यकता को सिद्ध करता है।

3. शोध के उददेश्य

1. मोहन राकेश की चयनित कहानियों में आधुनिक दाम्पत्य जीवन का अध्ययन करना।
2. पति-पत्नी संबंधों के मनोवैज्ञानिक पक्षों का विश्लेषण करना।
3. सामाजिक परिवर्तन एवं बदलते पारिवारिक मूल्यों के प्रभाव का मूल्यांकन करना।
4. स्त्री-पुरुष पात्रों की मानसिक अवस्थाओं का तुलनात्मक अध्ययन करना।
5. आधुनिक हिंदी कथा-साहित्य में दाम्पत्य जीवन के चित्रण में मोहन राकेश के योगदान का मूल्यांकन करना।

4. शोध पद्धति एवं परिकल्पना

प्रस्तुत शोध गुणात्मक, विश्लेषणात्मक एवं व्याख्यात्मक शोध-पद्धति पर आधारित है। शोध में मोहन राकेश की कहानियों का पाठ-विश्लेषण करते हुए आधुनिक दाम्पत्य जीवन के मनोवैज्ञानिक पक्षों का अध्ययन किया गया है। प्राथमिक स्रोत के रूप में मूल कहानियों तथा द्वितीयक स्रोत के रूप में आलोचनात्मक ग्रंथ, शोध-पत्र एवं मनोविज्ञान संबंधी पुस्तकों का उपयोग किया गया है। शोध साहित्य और मनोविज्ञान के अंतःविषयक दृष्टिकोण पर आधारित है।

परिकल्पना

1. मोहन राकेश की कहानियाँ आधुनिक दाम्पत्य जीवन की मनोवैज्ञानिक जटिलताओं को यथार्थ रूप में प्रस्तुत करती हैं।
2. दाम्पत्य संबंधों में तनाव का प्रमुख कारण संवादहीनता, अहं-संघर्ष एवं भावनात्मक दूरी है।
3. सामाजिक परिवर्तन एवं बदलते पारिवारिक मूल्य दाम्पत्य संबंधों को प्रभावित करते हैं।
4. लेखक ने स्त्री और पुरुष दोनों के मनोवैज्ञानिक संघर्षों का संतुलित चित्रण किया है।
5. कहानियाँ दाम्पत्य जीवन को सामाजिक ही नहीं, बल्कि मनोवैज्ञानिक एवं अस्तित्वगत अनुभव के रूप में भी प्रस्तुत करती हैं।

5. शोध का सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य

प्रस्तुत शोध मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण पर आधारित है। साहित्य और मनोविज्ञान का संबंध अत्यंत निकट है, क्योंकि साहित्य मानव के अनुभवों, भावनाओं, व्यवहार और संबंधों की कलात्मक अभिव्यक्ति करता है, जबकि मनोविज्ञान उनके कारणों एवं मानसिक प्रक्रियाओं का वैज्ञानिक अध्ययन करता है। इसलिए साहित्यिक कृतियों के विश्लेषण में मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण पात्रों के व्यक्तित्व, मानसिक द्वंद्व तथा संबंधों की जटिलताओं को समझने का प्रभावी माध्यम है। प्रस्तुत शोध में मनोविश्लेषणात्मक दृष्टिकोण के आधार पर पात्रों के व्यवहार, दबी हुई इच्छाओं, मानसिक संघर्षों तथा भावनात्मक प्रतिक्रियाओं का अध्ययन किया गया है। साथ ही विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान के माध्यम से आत्मपहचान, व्यक्तित्व-विकास और संबंधों की जटिलताओं को समझने का प्रयास किया गया है। मानवतावादी मनोविज्ञान के अनुसार प्रेम, सम्मान, सुरक्षा और आत्मीयता जैसी भावनात्मक आवश्यकताओं की पूर्ति न होने पर व्यक्ति मानसिक तनाव और असंतोष का अनुभव करता है, जिसका चित्रण मोहन राकेश की कहानियों में मिलता है। अस्तित्ववादी मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण भी इस अध्ययन का महत्वपूर्ण आधार है। आधुनिक व्यक्ति स्वतंत्रता, आत्मनिर्णय और व्यक्तिगत पहचान की खोज में अनेक मानसिक संघर्षों से गुजरता है। यही संघर्ष दाम्पत्य संबंधों में तनाव, अलगाव और भावनात्मक विखंडन का कारण बनते हैं। मोहन राकेश के पात्र पारंपरिक मूल्यों और आधुनिक व्यक्तिवादी चेतना के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास करते हैं, किंतु इसी प्रक्रिया में उनके संबंध जटिल हो जाते हैं।

इस शोध के माध्यम से यही स्पष्ट करने का प्रयत्न किया गया है कि आधुनिक दाम्पत्य जीवन की समस्याएँ केवल सामाजिक परिस्थितियों का परिणाम नहीं हैं, बल्कि व्यक्ति की मानसिक संरचना, भावनात्मक आवश्यकताओ और अस्तित्वगत संघर्षों के कारण हैं। इस प्रकार मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण मोहन राकेश की कहानियों में आधुनिक दाम्पत्य जीवन की गहन एवं यथार्थपरक व्याख्या का प्रभावी सैद्धांतिक आधार प्रदान करता है।

6. आधुनिक दाम्पत्य जीवन के मनोवैज्ञानिक आयाम संवादहीनता

मोहन राकेश की कहानियाँ में दाम्पत्य जीवन केवल पति-पत्नी के सामाजिक संबंध तक सीमित नहीं है, बल्कि वह व्यक्ति के मानसिक, भावनात्मक और अस्तित्वगत संघर्षों का दर्पण बनकर उभरता है। आधुनिक दाम्पत्य जीवन का सबसे प्रमुख मनोवैज्ञानिक आयाम संवादहीनता है। पति-पत्नी के बीच संवाद का अभाव संबंधों में भावनात्मक दूरी उत्पन्न करता है। ''ये कहने कि जिसके मुँह में जबान ही न हो, उसके साथ पूरी जिन्दगी कैसे काटी जा सकती है इन्सान में और एक पालतू जानवर में क्या फर्क है?1 अपरिचित कहानी में स्त्री का पति नही बोलने वाले लोगो के लिए ये बात कहता है और दोनों पति - पत्नी के बीच की संवादहीनता का पता चलता है क्योकि वह अपने पति के सामने कुछ भी नही कह पाती है। ''मेरी बहुत खराब आदत है, ''वह बोली'', मैं बात-बेबात के सोचती रहती हूँ। कभी-कभी तो मुझे लगता है कि मैं सोच-सोचकर पागल हों जाऊँगी। ये मुझसे कहते हैं कि मुझे लोगों से मिलना-जुलना चाहिए, खुलकर हंसना, बात करना चाहिए, मगर इनके सामने मैं ऐसे गुमसुम हो जाती हूँ कि क्या कहूँ? वैसे और लोगों से भी मैं ज्यादा बात नहीं करती लेकिन इनके सामने तो चुप्पी ऐसी छा जाती है जैसे मुँह में जबान हो ही नहीं... अब देखिए न, इस वक्त कैसे लतर-लतर बात कर रही हूँ!''2 लेकिन वही स्त्री एक अजनबी मुसाफिर से लगातार बातचीत कर रही इससे यही ज्ञात होता है की दोनों पति पत्नी के बीच संवादहीनता बहुत गहरी है। ''मैं नहीं जानती, ''वह बोली'' 'मगर इतना जानती हूँ कि मैं बहुत-से परिचित लोगो के बीच अपने को अपरिचित, बेगाना और अनमेल अनुभव करती हूँ।'3 इसी कारण स्त्री को उसका पति सामाजिक दृष्टि से मिसफिट कह देता है। जब एक पत्नी अपने पति की अपेक्षा के अनुसार व्यवहार नही कर पाती है तो दोनों के बीच दूरियां आने लगती है क्योकि दोनों ही एक दूसरे को समझ नही पाते ।''मैं बहुत पागल हूँ,'' वह फिर बोली, 'ये जितना मुझे टोकते हैं, मैं उतना रोती हूँ। दरअसल, ये मुझे समझ नहीं पाते। मुझे बात करना अच्छा नहीं लगता क्यों ये मुझे बात करने के लिए मजबूर करते हैं ? 'और फिर माथे को हाथ से दबाये हुये बोली, 'आप भी अपनी पत्नी से जबर्दस्ती बात करने के लिए कहते हैं?', 'मैं?' मैंने मुस्कुराने की चेष्टा करते

हुए कहा, 'मुझे यह कहने का कभी मौका ही नहीं मिल पाता। मैं बल्कि पाँच साल से यह चाह रहा हूँ कि वह जरा कम बात किया करे, मैं समझता हूँ कि कई बार इन्सान चुप रहकर ज्यादा बात कह सकता है।'4 वही दूसरी ओर अजनबी की पत्नी लगातार बोलती है जो उसे बिल्कुल भी अच्छा नही लगता , अपरिचित कहानी में स्पष्ट दिखाई देता है कि दोनों पात्र एक-दूसरे के साथ रहते हुए भी अपने मन की वास्तविक भावनाओं को व्यक्त नहीं कर पाते। परिणामस्वरूप गलतफहमियाँ, असंतोष और मानसिक तनाव बढ़ते जाते हैं। संवादहीनता संबंधों को धीरे-धीरे औपचारिक बना देती है और आत्मीयता समाप्त होने लगती है।

भावनात्मक रिक्तता और अकेलापन

आधुनिक जीवन की व्यस्तता, प्रतिस्पर्धा और व्यक्तिवादी सोच के कारण पति-पत्नी एक-दूसरे की भावनात्मक आवश्यकताओं को समझने में असफल रहते हैं। वे सामाजिक रूप से साथ रहते हैं, किंतु मानसिक रूप से अकेले होते हैं। 'फोलाद का आकाश' तथा 'सुहागिनें' तथा 'ग्लास टैंक' में यह अकेलापन अत्यंत मार्मिक रूप में चित्रित हुआ है। 'फोलाद का आकाश' कहानी में रवि और मीरा में भावनात्मक रिक्तता और अकेलापन देखने को मिलता है रवि हमेशा अपने कार्य में व्यस्त रहता है और जब भी उसे मीरा से अन्तरंग चाहिए होता है तो वह मीरा की इच्छा को ना देखकर सिर्फ अपनी इच्छा को ही मान देता। 'कहता वह बहुत उलझे ढंग से , 'देखो, हो सके तो ....' या , 'देखो कर सको तो ...' दस साल साथ रहकर मीरा जान चुकी थी कि इस तरह बात उसकी मर्जी पर नही छोड़ी जाती ,सिर्फ आदेश को तकल्लुफ का जामा पहना दिया जाता है।'5 जब दोनों के बीच इस तरह का रिश्ता हो तो वहां भावनात्मक रिक्तता और अकेलापन आने लगता है। लेखक यह स्पष्ट करते हैं कि केवल साथ रहना दाम्पत्य जीवन की सफलता का प्रमाण नहीं है; भावनात्मक सहभागिता और आत्मीयता ही संबंधों की वास्तविक शक्ति है।

अहं-संघर्ष

आधुनिक दाम्पत्य जीवन की एक अन्य प्रमुख मनोवैज्ञानिक समस्या व्यक्ति का अहं और संघर्ष है। 'ब्याह के कुछ महीने बाद से ही पति-पत्नी अलग रहने लगे थे। ब्याह के साथ जो सूत्र जुड़ना चाहिए था, वह जुड़ नहीं सका था। दोनों अलग-अलग जगह काम करते थे और अपना-अपना स्वतन्त्र ताना-बाना बुनकर जी रहे थे। लोकाचार के नाते साल - छः महीने में कभी एक बार मिल लिया करते थे। वह लोकाचार ही इस बच्चे को दुनिया में ले आया था'...,6 यहाँ दोनों पति - पत्नी के भावनात्मक जुडाव हो ही नही पाता क्योकि दोनों का अहं और संघर्ष आड़े आता रहता है। 'फिजूल की भावुकता में कुछ नहीं रखा है। बच्चे-वच्चे तो होते ही रहते हैं विच्छेद करके फिर से ब्याह कर लिया जाये, तो घर में और बच्चे हो जायेंगे । मन में इतना ही सोच लेना होगा कि इस बच्चे के साथ कोई दुर्घटना हो गयी थी...।'7 प्रकाश विवाह विच्छेद करके पुनः अपना नया जीवन सुचारु रूप से जी पाया है क्या बीना भी स्वतंत्र होकर खुशी से रह पायी , नही दोनों का जीवन कही ना कही अटका रह गया है। ''तब नये सिरे से फिर वही सवाल उसके मन में उठने लगा। क्यों वह अपने को इस अतीत से पूरी तरह मुक्त नहीं कर लेता? अगर बसा हुआ घर - बार हो , तो उसकी चहल - पहल में वह इस दुःख को भूल नहीं जायेगा? उसने अपने को इसीलिये तो बच्चे से अलग किया था कि अपनी जिन्दगी को एक नया मोड़ दे सके - फिर इस तरह अकेली जिन्दगी जीकर वह यह यन्त्रणा किसलिए सह रहा है''?8 प्रकाश और बीना का दाम्पत्य जीवन एक अधूरे लक्ष्य की ओर अग्रसर होता रहता है । आधुनिक शिक्षित स्त्री और पुरुष दोनों अपने व्यक्तित्व, आत्मसम्मान और स्वतंत्र निर्णयों को महत्त्व देते हैं। जब पारस्परिक समझ और समायोजन का अभाव होता है, तब अहं की टकराहट संबंधों में तनाव उत्पन्न करती है। मोहन राकेश के पात्र अपने दृष्टिकोण को सही मानते हुए एक-दूसरे को समझने की अपेक्षा स्वयं को सिद्ध करने का प्रयास करते हैं। यही प्रवृत्ति संबंधों में दूरी और विघटन का कारण बनती है।

आत्मपहचान

आधुनिक व्यक्ति केवल पति या पत्नी की भूमिका तक सीमित नहीं रहना चाहता, बल्कि वह अपनी स्वतंत्र पहचान, व्यक्तिगत आकांक्षाओं और आत्मसम्मान को बनाए रखना चाहता है। जब व्यक्तिगत आकांक्षाएँ वैवाहिक अपेक्षाओं से टकराती हैं, तब मानसिक द्वंद्व उत्पन्न होता है। ''एक और जिंदगी'' इसे आपको सौंप दूँ? 'बीना के स्वर में वितृष्णा गहरी हो गयी, 'किस चीज के भरोसे ? कल को आपकी जिन्दगी क्या होगी, यह कौन कह सकता है? बच्चे को उस अनिश्चित जिन्दगी के भरोसे छोड़ दूँ-इतनी मूर्ख मैं नहीं हूँ।'9 बीना के आगे प्रकाश का कोई वजूद वह नही समझती है क्योकि बीना एक अच्छे पद पर कार्यरत है वही प्रकाश का कोई निश्चित कार्य नही है दोनों में आर्थिक स्तर को लेकर दूरियां बढती जाती है 'एक और जिन्दगी' में यह संकट विशेष रूप से दिखाई देता है। इसीलिए दाम्पत्य जीवन में व्यक्तिगत स्वतंत्रता और पारिवारिक उत्तरदायित्व के बीच संतुलन आवश्यक है।

मानसिक तनाव और अस्तित्वगत संकट

आधुनिक दाम्पत्य जीवन में मानसिक तनाव और अस्तित्वगत संकट के कारण आर्थिक दबाव, सामाजिक अपेक्षाएँ, व्यावसायिक प्रतिस्पर्धा तथा बदलती जीवन-शैली व्यक्ति को मानसिक रूप से अस्थिर करती हैं। इस अस्थिरता का प्रभाव सीधे वैवाहिक संबंधों पर पड़ता है। लेखक के पात्र कई बार स्वयं से ही संघर्ष करते दिखाई देते हैं और यही आंतरिक संघर्ष उनके दाम्पत्य संबंधों को भी प्रभावित करता है। मोहन राकेश अपनी कहानियों में स्त्री और पुरुष दोनों की मनोवैज्ञानिक समानता का चित्रण करते हुए किसी

एक पक्ष को दोषी नहीं ठहराते, बल्कि यह दिखाते हैं कि दोनों ही परिस्थितियों, सामाजिक परिवर्तनों और अपनी-अपनी मानसिक सीमाओं के कारण संबंधों में तनाव का अनुभव करते हैं। इस संतुलित दृष्टिकोण के कारण उनकी कहानियाँ केवल पारिवारिक कथाएँ न रहकर मानवीय मनोविज्ञान का गंभीर अध्ययन बन जाती हैं।

इन कहानियों का अध्ययन स्पष्ट करता है कि आधुनिक दाम्पत्य जीवन की समस्याओं का समाधान केवल सामाजिक व्यवस्था में नहीं, बल्कि पारस्परिक संवाद, विश्वास, संवेदनशीलता, भावनात्मक सहयोग तथा एक-दूसरे की मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं को समझने में निहित है। इस प्रकार मोहन राकेश की कहानियाँ आधुनिक दाम्पत्य जीवन के मनोवैज्ञानिक आयामों का अत्यंत गहन, यथार्थवादी और संवेदनशील चित्र प्रस्तुत करती हैं। वे यह स्थापित करती हैं कि वैवाहिक संबंधों की सफलता प्रेम, विश्वास और संवाद पर आधारित होती है, जबकि संवादहीनता, अहं-संघर्ष, भावनात्मक उपेक्षा और आत्मपहचान का संकट संबंधों के विघटन के प्रमुख कारण बनते हैं।

7. निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध से स्पष्ट होता है कि मोहन राकेश की कहानियाँ आधुनिक दाम्पत्य जीवन के मनोवैज्ञानिक यथार्थ को प्रभावी रूप से चित्रित करती हैं। पति-पत्नी संबंधों को मानवीय भावनाओं, मानसिक संघर्षों और बदलते सामाजिक परिस्थितियों से जोड़कर प्रस्तुत किया गया है। उनकी कहानियों में मुख्य रूप से आधुनिक मध्यवर्गीय जीवन की कठिनाइयाँ, संवादहीनता, अकेलापन, आत्म-संघर्ष, भावनात्मक दूरी और आत्म-पहचान के संकट हैं। दाम्पत्य संबंधों में उत्पन्न तनाव केवल व्यक्तिगत कारणों से नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन, व्यक्तिवादी चेतना और बदलते पारिवारिक मूल्यों से भी प्रभावित होता है। लेखक ने इन परिस्थितियों का चित्रण अत्यंत संतुलित एवं संवेदनशील दृष्टि से किया है। उन्होंने स्त्री और पुरुष दोनों की मानसिक अवस्थाओं को समान महत्त्व देते हुए संबंधों की जटिलता को गहराई से अभिव्यक्त किया है। इस अध्ययन से यह निष्कर्ष भी निकलता है कि स्वस्थ दाम्पत्य जीवन के लिए संवाद, विश्वास, संवेदनशीलता और भावनात्मक सहभागिता आवश्यक हैं। साहित्य और मनोविज्ञान के अंतःविषयक दृष्टिकोण से देखा जाए तो मोहन राकेश की कहानियाँ आधुनिक दाम्पत्य जीवन की समस्याओं को समझने का प्रभावी आधार प्रदान करती हैं तथा हिंदी कथा-साहित्य में उनके महत्त्वपूर्ण योगदान को स्थापित करती हैं।

सन्दर्भ :

Journal Papers:

1. मकवाना, ए. वी. "मोहन राकेशजी : जीवन और सृजन।" इंटरनेशनल जर्नल ऑफ सोशल इम्पैक्ट, खंड 4, अंक 2, 2019।
2. इशिता। "साहित्य और मनोविज्ञान : मोहन राकेश के 'आधे-अधूरे' के माध्यम से एक विश्लेषण।" रिसर्च गुरु : ऑनलाइन जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी सब्जेक्ट्स, खंड 16, अंक 2, सितंबर 2022।
3. मिश्रा, एस. जे. "समकालीन भारतीय समाज में स्त्री-पुरुष के बदलते संबंध : मोहन राकेश के 'आधे-अधूरे' के संदर्भ में।" वेदा'स जर्नल ऑफ इंग्लिश लैंग्वेज एंड लिटरेचर (JOELL), खंड 7, अंक 2, 2020, पृ. 13–17।

Books:

1. मोहन राकेश - अपरिचित - मोहनराकेश की सम्पूर्ण कहानियाँ - राजपाल एण्ड सन्स(2025, पृष्ठ सं.101)
2. मोहन राकेश - अपरिचित - मोहनराकेश की सम्पूर्ण कहानियाँ - राजपाल एण्ड सन्स(2025, पृष्ठ सं.101)
3. मोहन राकेश - अपरिचित - मोहनराकेश की सम्पूर्ण कहानियाँ - राजपाल एण्ड सन्स(2025, पृष्ठ सं.103)
4. मोहन राकेश - अपरिचित - मोहनराकेश की सम्पूर्ण कहानियाँ - राजपाल एण्ड सन्स(2025, पृष्ठ सं.101)
5. मोहन राकेश - फोलाद का आकाश -मोहनराकेश की सम्पूर्ण कहानियाँ - राजपाल एण्ड सन्स(2025, पृष्ठ सं.127)
6. मोहनराकेश - एक और जिन्दगी - मोहनराकेश की सम्पूर्ण कहानियाँ - राजपाल एण्ड सन्स(2025, पृष्ठ सं.304)
7. मोहनराकेश - एक और जिन्दगी - मोहनराकेश की सम्पूर्ण कहानियाँ - राजपाल एण्ड सन्स(2025, पृष्ठ सं.305)
8. मोहनराकेश - एक और जिन्दगी - मोहनराकेश की सम्पूर्ण कहानियाँ - राजपाल एण्ड सन्स(2025, पृष्ठ सं.307)
9. मोहनराकेश - एक और जिन्दगी - मोहनराकेश की सम्पूर्ण कहानियाँ - राजपाल एण्ड सन्स(2025, पृष्ठ सं.305)
10. सिंह, नामवर (1966/2016). कहानी : नई कहानी. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन.
11. यादव राजेन्द्र: (1968). कहानी : स्वरूप और संवेदना. नई दिल्ली: नेशनल पब्लिशिंग हाउस.
12. मिश्र रामदरश :(1994). हिंदी कहानी : अंतरंग पहचान. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन.